आरती श्री लक्ष्मी नारायण जी की

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥
कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥

ओउम् जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा ।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक-हरणा ॥ ॐ जयo ॥ टेक ॥.

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे ॥ स्वामी ॥
नारद करत नीराजन, घंटा ध्वनि बाजे ॥ ॐ जयo ॥

प्रकट भयो कलिकारण, द्विज को दरश दियो ॥ स्वामी ॥
बूढ़ो ब्राह्मण बन के, कंचन महल कियो ॥ ॐ जयo ॥

दुर्बल भील कराल, जिन पर कृपा करी ॥ स्वामी ॥
चंद्रचूड़ एक राजा, तिनकी विपद् हरी ॥ ॐ जयo ॥

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीनी ॥ स्वामी ॥
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति किनी ॥ ॐ जयo ॥

भाव-भक्ति के कारण, छिन छिन रूप धरयो ॥ स्वामी ॥
श्रद्धा धारण किनी, तिन के काज सरयो ॥ ॐ जयo ॥

ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करी ॥ स्वामी ॥
मन वांछित फल दीनो, दीन दयाल हरी ॥ ॐ जयo ॥

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा ॥ स्वामी ॥
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्य देवा ॥ ॐ जयo ॥

स्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे ॥ स्वामी ॥
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांच्छित फल पावे ॥ ॐ जयo ॥